ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 183-185
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रभता का उनके व्यावसायिक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन

1. डा0 माया शंकर 2. डॉ0 भूपाल सिंह

1. एसोसिएट प्रोफेसर बी. एड विभाग, एम.डी.पी.जी कॉलेज, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, प्रताप बहादुर पी0जी0 कॉलेज, सिटी, प्रतापगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received- 05.11.2018, Revised- 11.11.2018, Accepted - 13.11.2018 E-mail: mayashankarpbh@gmail.com

सारांश : ***भारत में शिक्षण परम्परा छात्र जीवन चरित्र और जीवेम शरदशतम् के अनुभाव से अनुप्राणित होकर प्राचीन समय से ही निर्बाध प्रवाहमान रही है। शिक्षण ने ही मानव जीवन की मूल प्रवृत्तियों का शोधन कर ज्ञान और विवेक द्वारा अन्वेषण की प्रवृत्ति पैदा की है। समाज में घटित घटनाओं को क्रमबद्ध कर उसके कारण और परिणाम की खोज करना तथा भविष्य के लिए नयी राहों को तलाशना, इत्यादि शैक्षिक इतिहास के लिए मील के पत्थर शाबित हुए है। भारतीय जन मानस सदैव से ही स्वमेव राष्ट्रम् उत्कृष्ठ जाग्रतम् की भावना से प्रेरित रहा है और इसका मूल कारण यहाँ के शिक्षक ही रहे हैं। शिक्षक के अपने निहित दायित्वों के निर्वाहन में परिपक्वता, कार्य पद्धति में प्रभावशीलता, जीवन में गुणवत्ता आदि प्रभावोत्पादक निहितार्थ है। इसीलिए समयानुकूल शिक्षक स्थितियों क अवमूल्यन क्रिया जाना आवश्यक है। जिससे उसके कार्यों की स्थिति और कुशलता की परिपक्वता की प्रभावशीलता का लाभ लिया जा सके।***

कुंजीभूत शब्द– शिक्षण परम्परा, शरदशतम्, अनुप्राणित, निर्बाध प्रवाहमान, अन्वेषण,उत्कृष्ठ जाग्रतम् ।

शिक्षा समाज का वह आईना है, जो समाज की आकांक्षाओं, आशाओं और आवश्यकताओं से युक्त लक्ष्य से प्रतिबिम्वित होकर जन–मानस के लिए अनिवार्यता को प्राप्त होती है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का ''बहुजन हिताय'' स्वरभ्य प्रधान होकर जन–मानस के हितार्थ ''बहुचन सुखाय'' जैसा आलम्बन का नेहत्व करता दिखाई पड़ता है। सृष्टि के ऊषाकाल से लेकर वर्तमान की तात्विक गवेष्णा तक शिक्षा ने निःसन्देह समाज का पथ प्रदर्शन किया होगा।

वास्तव में भारत में भी शैक्षिक परम्परा इसी अनुभाव है, अनुप्राणित होकर प्राचीन समय से ही निर्बाध प्रवाहमान है। शिक्षा ने ही मानव जाति की मूल प्रवृत्तियों का शोधन कर ज्ञान और विवेक द्वारा अन्वेषण की प्रवृत्ति पैदा की है। समाज में घटित घटनाओं को क्रमबद्ध कर उसके कारण और परिणाम की खोज करना था भविष्य के लिए नयी राहों को तलाशना, शायद शैक्षिक इतिहास के लिए यही सब मील के पत्थर साबित हुए हैं। जिस प्रकार अतीत में ही वर्तमान के लिए बीजारोपण कर दिया जाता है उसी आधार पर भारतीय गौरव शाली शैक्षिक अतीत की संकल्पना की जा सकती है। जिससे वर्तमान आलोकित हुआ और भविष्य के प्रति आस्था का संचार हुआ।

शोध अध्ययन की आवश्यकता– अतः यह नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है कि देश में माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा क्रम की एक अत्यन्त मजबूत कड़ी बन सके और राष्ट्र के विकास में युवा शक्ति का निर्माणात्मक सदुपयोग प्राप्त हो सके परन्तु इन सबके लिए शिक्षण व्यवसाय में परिपक्व शिक्षकों के अटूट क्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसीलिए वर्तमान परिदृश्य में माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षक की स्थिति का अवमूल्यन किया जाय। जिससे माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के कार्यों की प्रभावशीलता का अध्ययन, उनमें जीवनादर्शी गुणात्मक तथ्यों का अवलोकन करने तथा शिक्षण कार्यों के प्रति उनकी संलग्नता का अध्ययन कर उनमें व्यावसायिक परिपक्वता का अवलोकन किया जाय। इसीलिए शोध अन्वेषक को प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता की प्रतीत हुई।

शोध अध्ययन का महत्व– शिक्षण उपक्रम ही शिक्षा में उपार्जित समस्याओं का निस्तारीकरण है। कदाचित प्रचलित शैक्षिक व्यवस्था में शिक्षा इन्हीं समस्याओं के कारण उपलब्धि और उपागम को प्राप्त करने में असमर्थ दिखाई पड़ रही है। शिक्षा अपने प्रत्येक स्तरों पर समरयाओं के प्रकारान्तर प्रभावों से प्रभावित किंकर्तव्यमूढ़ होकर जीवनदर्शी उपक्रमों से केवल यथार्थवादी विचारों से ओत–प्रोत दिखाई पड़ती है। सम्प्रति माध्यमिक स्तर की शिक्षा आज विश्व के सबसे बड़ी शिक्षा समूहों में से एक होने के बावजूद जिस निराशा और अवसाद के दल–दल में फंसी हुई है, इस झंझावत परिस्थितियों से निकलने का केवल एक ही रास्ता है इसमें अध्यापनरत शिक्षक अपनी सम्पूर्ण समता, योग्यता और अभिरूचि के अनुरूप अपने–अपने कार्यों में संलग्न हो।

शोध समस्या का चयन– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रमता का उनके व्यावसायिक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन।

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

शोध अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्नांकित अनुसन्धान उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन किया गया है–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रभता का अध्ययन करना।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का व्यावसायिक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रभता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का व्यावसायिक परिपक्वता पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध ऑकड़ों का विश्लेषण–

तालिका संख्या–1

अध्यापनरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का अध्ययन

'kSk pj	l {;k	e/; eku	eku d fopyu	eku d =qfV	e/; vUrj	ØkfUrd vuqikr
v/;kiujr f'k{kd	25	46-89	8-38	0-749	1-23	1-642
v/;kiujr f'kf{kdk,¡	25	45-66	9-92			

स्वतंत्रयांश 48 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान = 2.56 तथा 1.98 पर सार्थक।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तालिका सं0 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रभता का मध्यमान 46.89 तथा मानक विचलन 8.38 पाया गया। इसी प्रकार उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का मध्यमान 45.66 तथा मानक विचलन 9.92 पाया गया। दोनों वर्गों के मध्यमान मानों का विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 0.749 तथा माध्य अन्तर 1.23 पाया। जबकि क्रान्ति अनुपात मान 1.642 पाया गया। जो कि निर्धारित स्वतन्त्राँश 48 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान 2.56 तथा 1.98 क्रमशः से कम पाया गया। जिसके आधार पर परिकल्पित परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि दोनों वर्गों के माध्यमान मानों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर अध्यायनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रभता का मध्यमान शिक्षिकाओं के मध्यमान से उच्च स्तर का पाया गया जोकि इस बात का संकेत करता है कि शिक्षिक वर्ग शिक्षिकाओं से अधिक कार्य निष्प्रभ पाये गये। प्राप्त परिणाम को चित्रारेख के माध्यम से भी स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका संख्या–2

अध्यापनरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का व्यावसायिक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन

'kSk pj	l {;k	e/; eku	eku d fopyu	eku d =qfV	e/; vUrj	ØkfUrd vuqikr
v/;kiujr f'k{kd	25	23-93	12-32	1-206	3-38	3-217
v/;kiujr f'kf{kdk,¡	25	27-81	8-16			

स्वतंत्रयांश 48 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान = 2.56 तथा 1.98 पर सार्थक।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तालिका सं0 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के कार्य निष्प्रभता के प्रभाव का मध्यमान 23.93 तथा मानक विचलन 12.32 पाया गया।

इसी प्रकार उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता के प्रभाव का मध्यमान 27.81 तथा मानक विचलन 8.16 पाया गया। दोनों वर्गों के मध्यमान मानों का विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 1.206 तथा माध्य अन्तर 3.88 पाया, जबकि क्रान्ति अनुपात मान 3.217 पाया गया। जो कि निर्धारित स्वतन्त्राँश 48 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान 2.56 तथा 1.98 क्रमशः से अधिक पाया गया।

जिसके आधार पर परिकल्पित परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का व्यावसायिक परिपक्वता पर प्रभाव में सार्थक अन्तर है। जबकि दोनों वर्गों के माध्यमान मानों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर अध्यायनरत शिक्षकों के मध्यमान, शिक्षिकाओं के मध्यमान से उच्च स्तर का पाया गया जोकि इस बात का संकेत करता है कि शिक्षिक वर्ग में शिक्षिकाओं से अधिक कार्य निष्प्रभता पायी गयी जो उनकी व्यावसायिक कार्य क्षमता को प्रभावित करती है।

शैक्षिक निहितार्थ– प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के अध्यापनरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभता का उनके व्यावसायिक क्षमताओं पर सार्थक प्रभाव पाया गया अर्थात् अगर शिक्षक में कार्य कुशलता की कमी होगी, कार्य स्थल पर उसका समायोजन ठीक नहीं होगा, कार्य के प्रति उच्च स्तर की अभिरूचि नहीं होगी तो वह कक्षा शिक्षण में छात्रों को अपना सर्वोपरि नहीं दे सकेगा और न ही छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का निराकरण कर सकेगा। इसलिये आवश्यक है कि शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य निष्प्रभवता को कम से कम किया जाय ताकि उनमें व्यावसायिक अभिरूचि का विकास हो।

PIF/3.007 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच0के0, 'सांख्यिकी के मूल तत्व' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. शर्मा, आर0ए0, 'शिक्षा अनुसंधान' सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता, एस0पी0, 'सांख्यिकीय विधियॉ' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 1997.
4. पित्रोदा, सैम योजना 538 योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली, अंक–9, सित–9, पृ0 5.
5. सारस्वती, मालती एवं मदन मोहन, 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. दूबे, अजय (2009) : 'माध्यमिक विद्यालयों में पूर्वनियुक्त एवं नवनियुक्त शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं सृजनशीलता का अध्ययन' शोधपत्र NDER 2009, Vol.-VIII Dec.-09.

*****